'शब्द-साक्षी', 'पश्यन्ती' एवं 'भारतीय भाषा चिन्तन की परंपराएँ' पुस्तकों का लोकार्पण

14/2/2022 को पं विद्यानिवास मिश्र की पुण्यतिथि पर विद्याश्री न्यास, श्रद्धानिधि न्यास एवं लालबहादुर शास्त्री स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दीनदयाल उपाध्याय नगर, चंदौली के संयुक्त तत्वावधान मे आयोजित 'यज्ञ की सनातन परंपरा' विषयक संगोष्ठी और संस्कृत कवि सम्मेलन का उद्घाटन मुख्य अतिथि प्रोफेसर हरेराम त्रिपाठी द्वारा माँ सरस्वती, पंडित जी और पं प्रसिद्ध नारायण मिश्र .के चित्र पर माल्यार्पण और दीप-प्रज्ज्वलन द्वारा किया गया। इस अवसर पर प्रो.हरेराम त्रिपाठी ने 'शब्द-साक्षी', 'पश्यन्ती' एवं 'भारतीय भाषा चिन्तन की परंपराएँ' नामक पुस्तकों का लोकार्पण किया।

पं. प्रसिद्ध नारायण मिश्र व्याख्यान के क्रम में प्रो हृदयरंजन शर्मा (काशी हिन्दूविश्वविद्यालय, वाराणसी) ने कहा कि वेदों मे ये बताया गया है कि हमारी यज्ञ की परंपरा अनादि है। वेदों की प्रामाणिकता पर पूर्व में पाश्चात्य विद्वानों के द्वारा आलोचना की गई है परंतु आधुनिक पाश्चात्य विद्वानो ने ये माना है कि 'वेद सृष्टि का उत्पादन करने वाला है'। यज्ञ ही वह माध्यम है जिससे हम वातावरण को शुद्ध बनाते हैं। शारीरिक और मानसिक शुद्धि हमे यज्ञ करने से ही प्राप्त होती है।

मुख्य आतिथि प्रो हरेराम त्रिपाठी ने पंडित जी की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि पंडित जी यज्ञ की सनातन परंपरा के जीवित उदाहरण थे। पंडित जी में धर्म के सभी दस लक्षण विद्यमान थे और सच्चे अर्थों मे वो भारतीय सनातन परंपरा के ध्वज वाहक थे। उनके व्यक्तित्व में प्राच्य और नवीन परंपरा का मिला-जुला स्वरूप था। पंडित जी परंपरा को बंधन नही मानते थे बल्कि उसे वह जीवन जीने का आधार मानते थे, वे भारतीय परंपरा को चिर युवा मानते हैं। अध्यक्षीय संबोधन देते हुए प्रो. मुरली मनोहर पाठक, कुलपति लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ ने कहा कि पंडित जी सृष्टि को यज्ञ के रूप में स्वीकार करते थे। भारतीय दर्शन की परंपरा मे यज्ञ को ब्रह्मांड की नाभि के रूप में स्वीकार किया गया है। उद्घाटन सत्र के आरंभ में प्रो. उमापति दीक्षित ने पौराणिक मंगलाचरण किया, आभासी पटल में जुड़े सभी लोगों का स्वागत डाक्टर दयानिधि मिश्र ने एवं सत्र का संचालन प्रकाश उदय ने किया। सायंकालीन सत्र में संस्कृत कवि गोष्ठी का आयोजन हुआ जिसकी अध्यक्षता प्रो. विन्देश्वरी प्रसाद मिश्र ने तथा संचालन प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी ने किया. स्वागत करते हुए डा. दयानिधि मिश्र ने विद्याश्री न्यास की तरफ से पं. रामरुचि त्रिपाठी संस्कृत कवि सम्मान' 2021 एवं 2022 से क्रमशः श्री कौशलेन्द्र पाण्डेय एवं श्री उपेन्द्र पाण्डेय को सम्मानित करने की घोषणा की। इस अवसर पर अरविन्द कुमार तिवारी (बागपत),

कौशलेन्द्र पाण्डेय

उपेन्द्र पाण्डेय

उपेन्द्र पाण्डेय (वाराणसी), कमला पाण्डेय (वाराणसी), कामता प्रसाद त्रिपाठी (प्रतापगढ़), कृपाराम त्रिपाठी 'अभिराम' (बलरामपुर), कौशल तिवारी (राजस्थान), गायत्री प्रसाद पाण्डेय (वाराणसी), चन्द्रकान्ता राय (वाराणसी), जनार्दन पाण्डेय 'मणि' (प्रयागराज), धर्मदत्त चतुर्वेदी, (वाराणसी), प्रवीण पण्ड्या (राजस्थान), बलराम शुक्ल (दिल्ली), महेश भट्ट (कर्नाटक), राजेन्द्र त्रिपाठी 'रसराज' (प्रयागराज), रामकृष्ण पेजत्ताय (अर्नाकुलम), विवेक पाण्डेय (वाराणसी), वीणा बी. भट्ट (तिरुपति), सतीश कपूर (काश्मीर), सदाशिव कुमार द्विवेदी, (वाराणसी), शतावधानी आर. गणेश (बेंगलुरु), श्रुति कानिटकर (मुम्बई), प्रो. विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र (वाराणसी), प्रो.हरिप्रसाद अधिकारी (वाराणसी) ने काव्य पाठ किया। काव्य गोष्ठी मे प्रो. उदयन मिश्र ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस वेबिनार मे तकनीकी सहयोग प्रतीक त्रिपाठी व शशिशेखर मिश्र ने किया।

डॉ दयानिधि मिश्र, सचिव, विद्याश्री न्यास

अमर उजाला | वाराणसी | बुधवार, 12 जनवरी 2022

छन्नूलाल मिश्र को मिलेगा राधिका देवी लोककला सम्मान

विद्याश्री न्यास की ओर से की गई सम्मान की घोषणा, 12 से 14 जनवरी तक ऑनलाइन होगा आयोजन

अमर उजाला ब्यूरो

वाराणसी। पंडित विद्या निवास मिश्र की याद में हर साल मिलने वाले विद्याश्री न्यास की ओर से वार्षिक सम्मानों की घोषणा कर दी गई है। इस बार पद्मविभूषण गायक पंडित छन्नूलाल मिश्र को 2021 का राधिका देवी लोककला सम्मान दिया जाएगा। इसके अलावा उत्तराखंड से गीतकार बुद्धिनाथ मिश्र, लखनऊ से चित्रकार काजी अशरफ सहित अन्य लोगों को भी सम्मान दिया जाएगा।

12 से 14 जनवरी तक ऑनलाइन होने वाले आयोजन में यह सम्मान दिया जाएगा। इस दौरान वेबिनार का आयोजन भी किया जाएगा। पंडित विद्यानिवास मिश्र के जन्मदिन पर हर साल सम्मान समारोह का आयोजन किया जाता है। विद्याश्री न्यास के सचिव दयानिधि मिश्र ने बताया कि 2021 में आचार्य विद्यानिवास मिश्र स्मृति सम्मान पानीपत हरियाणा से विद्वान राजेंद्र रंजन चतुर्वेदी, वर्ष 2022 का सम्मान महाराष्ट्र से कथाकार, गांधीवादी चिंतक विश्वास पाटिल और लोक कवि सम्मान 2021 का देहरादून उत्तराखंड के गीतकार बुद्धिनाथ मिश्र को दिया जाएगा। इसके साथ ही वर्ष 2022 का लोककवि सम्मान बिहार से गीतकार रविकेश मिश्र, वर्ष 2021 का राधिका देवी लोककला सम्मान वाराणसी के शास्त्रीय गायक पंडित छन्नू लाल मिश्र, वर्ष 2022 में लखनऊ के चित्रक ार काजी अशरफ को युवा कला सम्मान से नवाजा जाएगा।

छन्नूलाल मिश्र।

महेंद्र नीलम।

दयानिधि मिश्र ने बताया कि गीतकार श्रीकृष्ण तिवारी की स्मृति में इस बार वर्ष 2021 का सम्मान वाराणसी से महेंद्र सिंह नीलम, वर्ष 2022 का पुरस्कार नवगीतकार इंदीवर को मिलेगा। विद्या निवास मिश्र पत्रकारिता सम्मान 2021 में माखन लाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति अच्युतानंद मिश्र को, जबकि वर्ष 2022 का सम्मान साहित्यिक पत्रिका नवनीत के संपादक मुंबई से विश्वनाथ सचदेव को दिया जाएगा।

'प्रमुख भारतीय भाषाएं : समकालीन प्रवृत्तियां' विषय पर वेबिनार में बोले विद्वतजन

वैश्विक भाषा बन रही हिन्दी

राष्ट्रीय सहारा
वाराणसी। बृहस्पतिवार • 13 जनवरी • 2022

वाराणसी (एसएनबी)। विद्याश्री न्यास एवं लालबहादुर शास्त्री पीजी कालेज दीनदयाल उपाध्याय नगर चंदौली के संयुक्त तत्वावधान में 'प्रमुख भारतीय भाषाएं : समकालीन प्रवृत्तियां' विषय पर केंद्रित राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. प्रकाश मणि त्रिपाठी द्वारा मां सरस्वती और पं. विद्या निवास मिश्र के चित्र पर माल्यार्पण, दीप प्रज्ज्वलन तथा प्रो. उमापति दीक्षित और पं. यज्ञ नारायण तिवारी की तरफ से पौराणिक और वैदिक मंगलाचरण से हुआ। विशिष्ट अतिथि के रूप में अपनी बात रखते हुए प्रो. कुमुद शर्मा ने कहा कि विभिन्न भारतीय भाषा के सर्जकों में मनुष्य को बचा लेने का एक सर्वव्यापी जिद दिखाई देती है। भारतीय भाषा की विभिन्न परंपराएं सांस्कृतिक साझेदारी को उत्कट को बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं, जिससे समभाव का भाव उत्पन्न होता है और एक राष्ट्र की भावना दृढ़ होती है।

मुख्य अतिथि प्रो प्रकाश मणि त्रिपाठी (कुलपति, इंदिरा गांधी जनजातीय विश्वविद्यालय) ने भारत की विभिन्न भाषाओं को एक दूसरे के निकट लाने में हिंदी जो भूमिका निभा सकती है और निभा सकती है, उसकी विशद चर्चा की। उन्होंने इस दिशा में पंडित विद्यानिवास मिश्र के योगदान का भी स्मरण किया। प्रो त्रिपाठी ने कहा कि कोरोनाकाल के इस समय में भाषा का भावनात्मक और संवेदनात्मक पक्ष उभर कर सामने आया है, भाषा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा साहित्य का सृजन होता है, साहित्य से समाज, संस्कार और हम सभी व्यक्त होते हैं, सभी भारतीय भाषाएं एक दूसरे के करीब आ रही हैं एवं हिन्दी धीरे धीरे वैश्विक भाषा बन रही है।

पंडित विद्यानिवास मिश्र के योगदान को बताया अविस्मरणीय

अध्यक्षीय वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष प्रोफेसर सदानंद गुप्त ने भारतीय भाषाओं की एकता के सूत्रधार के रूप में रामायण और महाभारत जैसे उपनिषद ग्रंथों के साथ पुनर्जन्म और कर्मफल जैसी सर्वस्वीकृत मान्यताओं का उल्लेख किया। प्रो गुप्त ने कहा कि भारतीय संस्कृति में प्रकृति और मनुष्य के बीच प्रतिद्वंद्विता नहीं है बल्कि हमारी दृष्टि परामर्शवाद(?) की है। भारतीय दृष्टि से अगर हम देखें तो मनुष्य का ये दायित्व है कि वह सभी का संरक्षण करे, पंडित जी भी इसी विचारधारा पर बल देते थे, पंडित विद्यानिवास जी के अनुराग-आलेखों(?) के माध्यम से जो ग्रहण हो वो ही लोक है।

विद्याश्री न्यास के सचिव डॉ दयानिधि मिश्र ने वक्ताओं और सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद किया। उद्घाटन समारोह का संयोजन व संचालन के दायित्व का निर्वाह प्रो. श्रद्धानंद ने किया। प्रथम अकादमिक सत्र में प्रो. स्वर्णप्रभा चैनारी ने बोडो भाषा की, डा. गोमा देवी शर्मा ने नेपाली भाषा की, प्रो. इ. गुरुदत्ती(?) देवी ने मणिपुरी भाषा की और प्रो. दमयन्ती बेसरा ने संथाली भाषा की भाषिक विशेषताओं पर ज्ञानप्रद और रोचक व्याख्यान प्रस्तुत किए। प्रो. दिलीप मेधी ने असमिया भाषा के परिचय कराया। इस सत्र का संयोजन और संचालन डा. सविता श्रीवास्तव और धन्यवाद- ज्ञापन डा. दयानिधि मिश्र ने किया। दूसरे अकादमिक सत्र में कन्नड़, तेलुगू, मलयालम और तमिल भाषा-साहित्य को लेकर इनके अधिकारी विद्वानों, क्रमशः प्रो. श्रीधर आर. हेगड़े, प्रो. सुमना देवी, डा. एजिमाउद्दीन(?) एम. एल. तथा डा. गोविन्द राजन ने गंभीर व्याख्यान प्रस्तुत किए। प्रो. सीमा बंद्योपाध्याय ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन के साथ ही बांग्ला भाषा-साहित्य की समकालीन प्रवृत्तियों का विशद विवेचन भी सामने रखा। इस सत्र का संयोजन डा. नंदू लाल राम ने किया। कार्यक्रम में तकनीकी सहयोग डा अनुराग राय, प्रतीक त्रिपाठी एवं शशिशेखर ने किया। इस कार्यक्रम में डा संजय पाण्डेय, डा इकरार अहमद, डा अमन, डा अमित राय, डा हर्ष, डा राजन प्रताप, डा विश्वनाथ, आदि उपस्थित रहे। विभिन्न भाषाओं को लेकर इस हिन्दी वार्ता का एक अलग और अलग तरह का आस्वाद है और सुखद है कि जूम एप के साथ ही फेसबुक के माध्यम से भी यूट्यूबर(?) और श्रोतागण जुड़े रहे। स्वागत और प्रस्तावना का दायित्व डॉ अमिताभ(?) मौर्य एवं प्रकाश उदय ने निभाया।

'प्रमुख भारतीय भाषाएं: समकालीन प्रवृत्तियां' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी

भाषा की पुनर्संरचना व जनपदीय ज्ञान परंपरा को संचित रखने में संस्कृत की अहम भूमिका

राष्ट्रीय सहारा
वाराणसी। शुक्रवार • 14 जनवरी • 2022

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

वाराणसी।

विद्याश्री न्यास एवं लालबहादुर शास्त्री पीजी कालेज दीनदयाल उपाध्याय नगर, चंदौली के संयुक्त तत्वावधान में 'प्रमुख भारतीय भाषाएं: समकालीन प्रवृत्तियां' विषय पर केंद्रित राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन गुरुवार को प्रो. बलराम शुक्ल (शिमला) ने कहा कि भारतीय भाषा की पुनर्संरचना और जनपदीय ज्ञान-परम्परा को संचित रखने में भी संस्कृत की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वस्तुतः संस्कृत भाषा मात्र नहीं है एक जनजीवन भी है।

बूटा सिंह बराड़ ने बताया कि पंजाबी भाषा का आधार स्रोत संस्कृत भाषा है एवं हिन्दी भाषा के शब्दों से भी पंजाबी भाषा के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान किया है। पंजाबी हिंदी की तुलना में संश्लेषणात्मक भाषा है। पंजाबी साहित्य शेख फरीद से शुरू होकर गुरुनानक, नानक, कबीर, रविदास से होते हुए आधुनिक युग तक पहुंची है। पंजाबी की लोक प्रेमकथाएं हीर-रांझा, सोहनी-महिवाल आदि विश्व प्रसिद्ध हैं। वर्ष 1900 तक का समय पंजाबी साहित्य के दृष्टिकोण से संक्रांति काल रहा। जय जयतानी(?) ने समकालीन सिन्धी साहित्य के माध्यम से हिन्दी और सिन्धी परंपरा को जोड़ने का प्रयास किया। अध्यक्षता करते हुए प्रो. दिलीप सिंह (अमरकंटक) ने कहा कि हिन्दी-उर्दू भाषाओं का विकासक्रम बहुत समय तक साथ चला, उर्दू का साहित्य देवनागरी में आने से इसे अखिल भारतीय परिप्रेक्ष्य मिला।

डॉ. दिलीप सिंह।

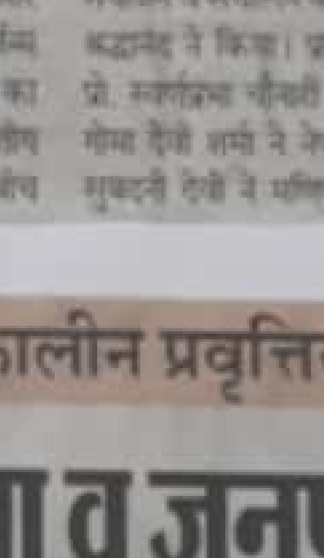

डॉ. [illegible]।

डॉ. बूटा सिंह बराड़।

चौथे सत्र में गुजराती, कोंकणी, डोगरी और कश्मीरी भाषा और इनके साहित्येतिहास पर इन भाषाओं के अधिकारी विद्वान ईश्वर सिंह चौहान, पूर्णानंद चारी(?) मंडिकर, वीणा गुप्त और सीतीकान्त(?) रैना ने महत्वपूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किए। अध्यक्षता विनायक पाटिल, संचालन डा. इकरार अहमद ने किया। अंतिम सत्र मराठी भाषा पर केन्द्रित रहा। जिसमें सुनील कुमार(?), प्रकाश उदय, सुनीता शर्मा, विद्याबिन्दु सिंह, कल्पना पाटिल, चक्रधर पाटील तथा श्रुति पाटील ने अपनी बातें रखीं। इस सत्र का अध्यक्षता डा. राजेन्द्र रंजन, सत्र का संयोजन डा. सुधा श्रीवास्तव ने किया। डा. उदयन, डा. संजय पाण्डेय, डा. इकरार अहमद, डा. अमन, डा. अमित राय, डा. हर्ष, डा. मैत्री ठाकुर, डा. हर्षवर्धन, डा. राजन प्रताप, डा. भावना, अनुराग शुक्ला, डा. अखिलेश, डा. महबूब, डा. गुणवती(?), डा. विकास राय, डा. राजीव, डा. विश्वनाथ, राकेश कुमार तिवारी आदि जुड़े रहे।

दैनिक जागरण वाराणसी, 13 जनवरी, 2022

भारतीय भाषाओं को निकट लाने में हिंदी की भूमिका अहम

संगोष्ठी

जागरण संवाददाता, वाराणसी : विद्याश्री न्यास व लालबहादुर शास्त्री पीजी कालेज दीनदयाल उपाध्याय नगर (चंदौली) की ओर से बुधवार को राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ किया गया। प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी ने कहा कि भारत की विभिन्न भाषाओं को एक दूसरे के निकट लाने में हिंदी प्रमुख भूमिका निभा सकती है। पं. विद्यानिवास मिश्र के योगदान को भी स्मरण किया।

प्रो. कुमुद शर्मा ने कहा कि भारतीय भाषा से समभाव का भाव उत्पन्न होता है। प्रो. सदानंद गुप्त ने उपनिषद ग्रंथों के साथ पुनर्जन्म और कर्मफल जैसी सर्वव्यापत मान्यताओं का उल्लेख किया। स्वागत डा. अखिलेश नीरज, प्रकाश उदय, संचालन डा. दयानिधि मिश्र, धन्यवाद ज्ञापन प्रो. ब्रह्मानंद ने दिया। प्रथम अकादमिक सत्र में प्रो. स्वर्णप्रभा चौनारी ने बोडो, डा. गीता देवी शर्मा ने नेपाली, प्रो. सुबदनी देवी ने मणिपुरी, प्रो. दमयंती बेसरा ने संथाली की भाषिक विशेषताओं पर व्याख्यान दिया। प्रो. दिलीप मेधी ने असमिया भाषा से परिचय कराया। संचालन डा. सविता श्रीवास्तव, धन्यवाद डा. दयानिधि मिश्र ने दिया। दूसरे सत्र में कन्नड़, तेलुगु, मलयालम और तमिल भाषा-साहित्य पर प्रो. श्रीधर आर हेगड़े, प्रो. सुषमा देवी, डा. एप्सिलीन एमएस, डा. गोविंद राजन ने विचार रखे। प्रो. सोमा बंद्योपाध्याय ने बांग्ला भाषा-साहित्य की समकालीन प्रवृत्तियों का विशद विवेचन सामने रखा। संयोजन डा. नरेंद्रनाथ राय, डा अनुराधा राय, प्रतीक त्रिपाठी, शशि शेखर, डा. संजय पांडेय, डा. इशरत जहां, डा. अरुण, डा. अमित राय, डा. हर्ष, डा. संजय प्रताप, डा. विश्वनाथ थे।

अमर उजाला वाराणसी | बृहस्पतिवार, 13 जनवरी 2022

भारतीय भाषाएं आ रहीं करीब हिंदी बन रही है वैश्विक भाषा

■ पं. विद्यानिवास मिश्र की जयंती के अवसर पर आयोजित हुआ वेबिनार

अमर उजाला ब्यूरो

प्रमुख भारतीय भाषाएं समकालीन प्रवृत्तियां विषय पर हुआ विमर्श

वाराणसी। इंदिरा गांधी जनजातीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी ने कहा कि कोरोनाकाल में भाषा का भावनात्मक और संवेदनात्मक पक्ष उभर कर सामने आया है। भाषा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा साहित्य का सृजन होता है, साहित्य से समाज, संस्था और हम सभी व्यक्त होते हैं, सभी भारतीय भाषाएं एक दूसरे के करीब आ रही हैं एवं हिंदी धीरे-धीरे वैश्विक भाषा बन रही है।

वह बुधवार को पं. विद्यानिवास मिश्र की जयंती के अवसर पर विद्याश्री न्यास एवं लाल बहादुर शास्त्री पीजी कॉलेज चंदौली के संयुक्त तत्वावधान में प्रमुख भारतीय भाषाएं समकालीन प्रवृत्तियां विषय पर केंद्रित वेबिनार को संबोधित कर रहे थे। विशिष्ट अतिथि प्रो. कुमुद शर्मा ने कहा कि विभिन्न भारतीय भाषा के सर्जकों में मनुष्य को बचा लेने की एक सार्वभौमिक जिद दिखाई देती है। अध्यक्षता करते हुए उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष प्रो. सदानंद गुप्त ने कहा कि भारतीय भाषाओं की मूल चेतना एक है, कर्मफल और पुनर्जन्म का सिद्धांत भारतीय साहित्य की अद्भुत विशेषता है। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि ने पं. विद्यानिवास मिश्र के चित्र पर माल्यार्पण, दीप प्रज्ज्वलन और मंगलाचरण से हुआ। इस दौरान डॉ. दयानिधि मिश्र, प्रो. ब्रह्मानंद, प्रो. स्वर्णप्रभा चौनारी, डॉ. गीता देवी शर्मा, प्रो. ह. सुबदनी देवी, प्रो. दमयंती बेसरा, डॉ. अनुराधा राय, प्रतीक त्रिपाठी एवं सहियोगिता आदि रहे।

वाराणसी। बृहस्पतिवार • 13 जनवरी • 2022 राष्ट्रीय सहारा

'प्रमुख भारतीय भाषाएं : समकालीन प्रवृत्तियां' विषय पर वेबिनार में बोले विद्वतजन

वैश्विक भाषा बन रही हिन्दी

वाराणसी (एसएनबी)। विद्याश्री न्यास एवं लालबहादुर शास्त्री पीजी कालेज दीनदयाल उपाध्याय नगर चंदौली के संयुक्त तत्वावधान में 'प्रमुख भारतीय भाषाएं : समकालीन प्रवृत्तियां' विषय पर केन्द्रित राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. प्रकाश मणि त्रिपाठी द्वारा मां सरस्वती और पं. विद्या निवास मिश्र के चित्र पर माल्यार्पण, दीप प्रज्ज्वलन तथा प्रो. उमापति दीक्षित और पं. चंद्र नारायण तिवारी की तरफ से पौराणिक और वैदिक मंगलाचरण से हुआ। विशिष्ट अतिथि के रूप में अपनी बात रखते हुए प्रो. कुमुद शर्मा ने कहा कि विभिन्न भारतीय भाषा के सर्जकों में मनुष्य को बचा लेने का एक सर्वव्यापी जिद दिखाई देती है। भारतीय भाषा की विभिन्न परंपराएं सांस्कृतिक साझेदारी की उत्कंठा को बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं, जिससे समभाव का भाव उत्पन्न होता है और एक राष्ट्र की भावना दृढ़ होती है।

मुख्य अतिथि प्रो. प्रकाश मणि त्रिपाठी (कुलपति, इंदिरा गांधी जनजातीय विश्वविद्यालय) ने भारत की विभिन्न भाषाओं को एक दूसरे के निकट लाने में हिंदी की भूमिका निभा सकती है और निभा सकती है, उसकी विशद चर्चा की। उन्होंने इस दिशा में पंडित विद्यानिवास मिश्र के योगदान का भी स्मरण किया। प्रो. त्रिपाठी ने कहा कि कोरोनाकाल के इस समय में भाषा का भावनात्मक और संवेदनात्मक पक्ष उभर कर सामने आया है, भाषा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा साहित्य का सृजन होता है, साहित्य से समाज, संसार और हम सभी व्यक्त होते हैं, सभी भारतीय भाषाएं एक दूसरे के करीब आ रही हैं एवं हिन्दी धीरे धीरे वैश्विक भाषा बन रही है।

पंडित विद्यानिवास मिश्र के योगदान को बताया अविस्मरणीय

अध्यक्षीय वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष प्रोफेसर सदानन्द गुप्त ने भारतीय भाषाओं की एकता के सूत्रधार के रूप में रामायण और महाभारत जैसे उपनिषद ग्रंथों के साथ पुनर्जन्म और कर्मफल जैसी सर्वव्यापक मान्यताओं का उल्लेख किया। प्रो. गुप्त ने कहा कि भारतीय संस्कृति में प्रकृति और मनुष्य के बीच प्रतिद्वंद्विता नहीं है बल्कि हमारी दृष्टि चराचरवाद की है। भारतीय दृष्टि से अगर हम देखें तो मनुष्य का ये दायित्व है कि वह सभी का संरक्षण करे, पंडित जी भी इसी विचारधारा पर बल देते थे, पंडित विद्यानिवास जी के अनुसार-ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से जो ग्राह्य हो वो ही लोक है।

विद्याश्री न्यास के सचिव डॉ. दयानिधि मिश्र ने वक्ताओं और सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद किया। उद्घाटन समारोह का संयोजन व संचालन के दायित्व का निर्वाह प्रो. श्रद्धानंद ने किया। प्रथम अकादमिक सत्र में प्रो. स्वर्णप्रभा चैनारी ने बोडो भाषा की, डा. सोमा देवी शर्मा ने नेपाली भाषा की, प्रो. ह. सुबदनी देवी ने मणिपुरी भाषा की और प्रो. दमयन्ती बेसरा ने संथाली भाषा की भाषिक विशेषताओं पर सारगर्भित और रोचक व्याख्यान प्रस्तुत किए। प्रो. दिलीप मेधी ने असमिया भाषा के परिचय कराया। इस सत्र का संयोजन और संचालन डा. सविता श्रीवास्तव और धन्यवाद- ज्ञापन डा. दयानिधि मिश्र ने किया। दूसरे अकादमिक सत्र में कन्नड़, तेलुगु, मलयालम और तमिल भाषा-साहित्य को लेकर इनके अधिकारी विद्वानों, क्रमशः प्रो. श्रीधर आर. हेगड़े, प्रो. सुषमा देवी, डा. एलिसलीन एम. एस. तथा डा. गोविन्द राजन ने गंभीर व्याख्यान प्रस्तुत किए। प्रो. सोमा बंद्योपाध्याय ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन के साथ ही बांग्ला भाषा-साहित्य की समकालीन प्रवृत्तियों का विशद विवेचन भी सामने रखा। इस सत्र का संयोजन डा. नरेंद्र नाथ राय ने किया। कार्यक्रम में तकनीकी सहयोग डा. अनुराधा राय, प्रतीक त्रिपाठी एवं शशिशेखर ने किया। इस कार्यक्रम में डा. संजय पाण्डेय, डा. इशरत जहां, डा. अरुण, डा. अमित राय, डा. हर्ष, डा. संजय प्रताप, डा. विश्वनाथ, आदि उपस्थित रहे। विभिन्न भाषाओं को लेकर इस हिन्दी बातचीत का एक अपना और अलग तरह का आस्वाद है और सुखद है कि जूम ऐप के साथ ही फेसबुक के माध्यम से भी सुधीजन और शोधछात्र जुड़े रहे। स्वागत और प्रस्तावना का दायित्व डॉ. अरूणेश नीरन एवं प्रकाश उदय ने निभाया।

हिन्दुस्तान वाराणसी • गुरुवार • 13 जनवरी 2022 •

विद्याश्री न्यास एवं पीडीडीयू नगर स्थित लालबहादुर शास्त्री पीजी कॉलेज का तीन दिवसीय आयोजन

कोरोनाकाल में उभरा भाषा का भावनात्मक पक्ष

वाराणसी | प्रमुख संवाददाता

कोरोनाकाल में भाषा का भावनात्मक और संवेदनात्मक पक्ष उभर कर सामने आया है। भाषा ही वह माध्यम है जिससे साहित्य सृजन होता है। साहित्य से समाज, संसार और हम सभी व्यक्त होते हैं। ये बातें इंदिरा गांधी जनजातीय विवि के कुलपति प्रो. श्रीप्रकाशमणि त्रिपाठी ने कहीं।

वह बुधवार को विद्याश्री न्यास एवं लालबहादुर शास्त्री पीजी कॉलेज (पीडीडीयू नगर) की ओर से आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। 'प्रमुख भारतीय भाषाएं : समकालीन प्रवृत्तियां' विषय संगोष्ठी में उन्होंने कहा कि सभी भारतीय भाषाएं एक-दूसरे के करीब आ रही हैं और हिन्दी धीरे-धीरे वैश्विक भाषा बन रही है। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के अध्यक्ष प्रो. सदानंद गुप्त ने अध्यक्षीय संबोधन में भारतीय भाषाओं की एकता के सूत्रधार के रूप में रामायण और महाभारत जैसे उपनिषद ग्रंथों की चर्चा की। विशिष्ट अतिथि प्रो. कुमुद शर्मा ने कहा कि विभिन्न भारतीय भाषा के सर्जकों में मनुष्य को बचा लेने की एक सर्वव्यापी जिद दिखाई देती है। इस मौके पर डॉ. संजय पाण्डेय, डॉ. इशरत जहां, डॉ. अरुण, डॉ. अमित राय, डॉ. हर्ष, डॉ. संजय प्रताप, डॉ. विश्वनाथ आदि रहे। प्रस्तावना प्रकाश उदय ने प्रस्तुत की। स्वागत डॉ. अरुणेश नीरन, संचालन प्रो. श्रद्धानंद, धन्यवाद विद्याश्री न्यास के सचिव डॉ. दयानिधि मिश्र ने दिया।

ऑनलाइन संगोष्ठी में शामिल विशिष्टजन।

अकादमिक सत्रों में अन्य भाषाओं पर चर्चा

प्रथम अकादमिक सत्र में प्रो. स्वर्णप्रभा चैनारी, डॉ. सोमा देवी शर्मा, प्रो. सुबदनी देवी, प्रो. दमयन्ती बेसरा और प्रो. दिलीप मेधी ने विभिन्न भाषा की विशेषताओं पर व्याख्यान प्रस्तुत किए। इस सत्र का संयोजन-संचालन डॉ. सविता श्रीवास्तव ने किया। दूसरे सत्र में कन्नड़, तेलुगु, मलयालम पर व्याख्यान हुए।

विद्याश्री न्यास ने की सम्मानों की घोषणा: विद्याश्री न्यास की ओर से प्रतिवर्ष दिए जाने वाले सम्मानों की घोषणा कर दी गई है। न्यास के सचिव डॉ. दयानिधि मिश्र के अनुसार वर्ष 2021 का राधिका देवी लोककला सम्मान पं. छन्नूलाल मिश्र को तथा 2022 का लखनऊ के चित्रकार काजी अशरफ को दिया जाएगा। वर्ष 2021 का विद्यानिवास मिश्र सम्मान पानीपत के पं. राजेंद्र रंजन चतुर्वेदी को, 2022 का महाराष्ट्र के गांधीवादी चिंतक डॉ. विश्वास पाटिल, 2021 का लोककवि सम्मान देहरादून के डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र, 2022 का गीतकार शैलेश मिश्र, श्रीकृष्ण तिवारी स्मृति सम्मान 2021 का गीतकार महेंद्र सिंह नीलम व 2022 का गीतकार ईश्वर पांडेय को पं. विद्यानिवास मिश्र पत्रकारिता पुरस्कार इन दो वर्षों के लिए क्रमशः माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विवि के पूर्व कुलपति प्रो. अच्युतानंद मिश्र व नवनीत के संपादक विश्वनाथ सचदेव को दिया जाएगा।

दैनिक जागरण वाराणसी, 14 जनवरी, 2022

ललित निबंध के पुरोधा थे पं. विद्यानिवास मिश्र

जागरण संवाददाता, वाराणसी : ललित निबंधों की विधा हिंदी में बेहद लोकप्रिय हुई। इसका उद्भव बालकृष्ण भट्ट व प्रताप नारायण मिश्र के काल से बाबू गुलाबराय तक माना जाता है। हालांकि इसे आज पूर्वाभ्यास भी कह सकते हैं। वास्तव में हिंदी में ललित निबंध की विधा हजारी प्रसाद द्विवेदी, पं. विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय के समय शुरू हुई इसलिए पं. विद्यानिवास मिश्र को ललित निबंध का पुरोधा माना जाता है।

पं.विद्यानिवास मिश्र • स्रोत डा.उदयन मिश्र

जयंती पर विशेष

जन्म : 14 जनवरी 1926

निधन : 14 फरवरी 2005

उन्होंने जयदेव के गीतिकाव्य गीत गोविंद को आधार बनाकर राधा माधव रंग रंगी या महाभारत का काव्यार्थ या साहित्य का खुला आकाश विषय पर विशेष निबंधों के संग्रह ललित निबंधों को नई पहचान दी। इसमें कहीं गांव के खलिहान में खुशी से झूमते अल्हड़ किसान के मुंह से निकले भोजपुरी लोकगीत हृदय को छूने वाले हैं। पं. विद्यानिवास के ललित निबंधों में भी भाव तरंगों के थपेड़ों के साथ कभी संस्कृत कवियों की सूक्तियों की फुहारें आ जाती हैं तो कभी पौराणिक व सांस्कृतिक परंपराओं के साथ लोकमानस की एकात्मता की बयार।

स्मरण

- उनके चिंतन एवं साहित्य में भारतीय लोक व उनकी संस्कृति पर गहरा प्रभाव
- कुलपति के रूप में महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ व संस्कृत विश्वविद्यालय को दी दिशा

पद्मभूषण पं. विद्यानिवास मिश्र का जन्म 14 जनवरी 1926 को गोरखपुर के पकडडीहा गांव में हुआ था। अध्यापन का कार्य उन्होंने वर्ष 1957 में गोरखपुर विश्वविद्यालय से प्रारंभ किया। वह आगरा विश्वविद्यालय, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, काशी विद्यापीठ, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के अलावा कैलीफोर्निया और वाशिंगटन विश्वविद्यालयों में भी अतिथि अध्यापक रहे। 15 अगस्त 1986 से 31 जुलाई 1989 तक वह काशी विद्यापीठ तथा 19 मई 1990 से 25 अक्टूबर 1992 तक वह संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति भी रहे।

हिंदी व संस्कृत के प्रकांड विद्वान, प्रख्यात निबंधकार, भाषाविद्, चिंतक पं. विद्यानिवास समाचार पत्रों में संपादक भी रहे। पं. विद्यानिवास का व्यक्तित्व व कृतित्व विविध आयामों से परिपूर्ण है। उनके चिंतन एवं साहित्य में भारतीय लोक व उनकी संस्कृति पर गहरा प्रभाव है। राज्यसभा के पूर्व सांसद व हिंदी के ललित निबंधों के पुरोधा विद्यानिवास मिश्र का निधन 14 फरवरी 2005 को एक सड़क दुर्घटना में हुआ था।

अमर उजाला वाराणसी शुक्रवार, 14 जनवरी 2022

नमन

पद्मभूषण प्रो. विद्यानिवास मिश्र की जयंती आज, पूर्व संध्या पर वेबिनार का आयोजन

'जीने का स्वाद और मरने को नकारना जानती है काशी'

अमर उजाला ब्यूरो

वाराणसी। पद्मभूषण प्रो. विद्यानिवास मिश्र संस्कृत के प्रकांड विद्वान, जाने-माने भाषाविद् और हिंदी साहित्यकार थे। आलोचना और ललित निबंध लेखन में प्रो. मिश्र का कोई विकल्प नहीं है। उन्होंने हिंदी जगत को ललित निबंध परंपरा से अवगत कराया।

लाल बहादुर शास्त्री पीजी कॉलेज के प्राचार्य डॉ. उदमन मिश्र ने बताया कि प्रो. विद्यानिवास मिश्र का जन्म 14 जनवरी 1926 को गोरखपुर जिले के पकडडीहा में हुआ था। 1957 से उन्होंने विश्वविद्यालयीय सेवा की शुरुआत की और तभी से गोरखपुर विश्वविद्यालय, आगरा विश्वविद्यालय, बीएचयू, काशी विद्यापीठ और संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय में कई पदों पर रहे।

विद्यानिवास मिश्र रचनावली में लिखा है कि कैसे कहें कि काशी मरने की नगरी है। जीने का स्वाद काशी जानती है, मरने को नकारना काशी जानती है, अमरता को ठेंगा दिखाना काशी जानती है। यह नगरी इसलिए मुक्तिधाम है कि यह परमपिता परमेश्वर की अनन्य भक्ति का धाम है। जो काशी में मरने का सौभाग्य नहीं पाते, वे भी अंतिम इच्छा रखते हैं कि काशी में दाह-संस्कार हो। यह भी न हो तो उनकी अस्थी यहां की गंगा में प्रवाहित हो, उनके पार्थिव जीवन का विलय गंगा के जीवन में हो, वह क्षुद्रता से उबारकर विशालता में विलीन हो, यही मृत्यु से अभय की इच्छा का अर्थ है।

संस्कृत भाषा ही नहीं एक तकनीक भी : प्रो. शुक्ल

वाराणसी। पं. विद्यानिवास मिश्र की जयंती की पूर्व संध्या पर विद्या श्री न्यास एवं लाल बहादुर शास्त्री पीजी कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में वेबिनार के दूसरे दिन शिमला से प्रो. कमलेश शुक्ल ने कहा कि संस्कृत मात्र भाषा नहीं एक तकनीक भी है। संस्कृत का विस्तार संस्कृति से जुड़ा है। कथाकार शहनाज रिजवी ने कहा कि उर्दू पूरी तरह से हिंदुस्तानी जबान है, जो अपना रास्ता खुद बनाती है, संस्कृत का वजूद अजमेरिया संस्कृति में भी दिखता है। बूटा सिंह बरार ने बताया कि पंजाबी भाषा का आधार स्रोत संस्कृत भाषा है। सिंधी भाषा के मोहन हिमथानी ने कहा कि सिंधु नदी के किनारे वेदों की रचना हुई। जया जादवानी ने समकालीन सिंधी साहित्य के माध्यम से हिंदी और सिंधी परंपरा को जोड़ने का प्रयास किया। अध्यक्षता करते हुए अमर कंटक से प्रो. दिलीप सिंह ने कहा कि उर्दू का साहित्य देवनागरी में आने से उसे अखिल भारतीय परिवेश मिला। संयोजन डॉ. गोरखनाथ पांडेय ने किया। चौथे सत्र में गुजराती, कोंकणी, डोगरी और कश्मीरी भाषा और इनके साहित्य इतिहास पर विमर्श हुआ। पांचवां सत्र मैथिली, भोजपुरी, बुंदेली, अवधी, कुमाऊंनी के साथ ही पूर्वोत्तर भारत और मेघालय की जन भाषाओं पर विमर्श हुआ। ब्यूरो

हिन्दुस्तान वाराणसी • गुरुवार • 14 जनवरी 2022 •

साथ-साथ पलता रहा हिंदी-उर्दू का विकास क्रम

राष्ट्रीय संगोष्ठी

वाराणसी | प्रमुख संवाददाता

वाराणसी। शनिवार • 15 जनवरी • 2022 | सहारा

भारतीय मनीषियों ने किया बहुभाषा को बढ़ावा देने का कार्य

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

वाराणसी।

विद्याश्री न्यास एवं लालबहादुर शास्त्री पीजी कालेज दीनदयाल उपाध्याय नगर, चंदौली के संयुक्त तत्वावधान में 'प्रमुख भारतीय भाषाएं : समकालीन प्रवृत्तियां' विषय पर केन्द्रित राष्ट्रीय संगोष्ठी पं. विद्या निवास मिश्र स्मृति व्याख्यान के छठे सत्र के अवसर पर सभी

विद्या निवास मिश्र की स्मृति में आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

अतिथियों का स्वागत सचिव विद्याश्री न्यास डा दयानिधि मिश्र ने किया। मुख्य वक्ता प्रो राधा वल्लभ त्रिपाठी ने कहा कि भारत में भाषा का एक व्यवस्थित दर्शन रहा है। समस्त भारतीय भाषाओं में समरसता की स्थिति रही है। सभी भाषाओं में समान शब्दावली और मुहावरे रहे हैं इसमें कौन दाता और कौन ग्रहीता है, इसका महत्व नहीं है। लोकभाषा में परस्पर संवाद होता रहा है। पूरी दुनिया में ये भ्रम फैलाया गया कि लोगों को संस्कृत समझ नहीं आती। इस कारण प्राकृत बोलचाल में प्रचलित हुई जबकि सत्य ये है कि प्राचीनकाल से ही बहुभाषा को बढ़ावा देने का कार्य भारतीय मनीषियों ने किया था। भारत की सभी भाषाएं आपस में एकदूसरे को सम्पन्न बनाती हैं उनमें आपसी प्रतिस्पर्धा नहीं रही है।

राजशेखर का मानना था कि जो काव्य ग्वाल बाल, महिलाओं व सामान्यजन तक पहुंचे वो ही श्रेष्ठ काव्य होता है। मध्यकाल में रहीम ने अपने काव्य में फारसी और संस्कृत के शब्दों का प्रयोग करके रचना की थी। विशिष्ट अतिथि प्रो सूर्यप्रकाश दीक्षित ने कहा कि भारतमाता की सभी भाषाएं एक ही स्वर मुखरित करती हैं। भाषा में बिना शोध किये हुए अपनी रुचि से नवीन भाषा नहीं बनाई जा सकती है।

अध्यक्षीय संबोधन देते हुए प्रो अच्युतानंद मिश्र ने सर्वप्रथम पंडित विद्यानिवास मिश्र को नमन किया। उन्होंने कहा कि भारतीय भाषाओं की मूल चेतना वैश्विक कल्याण की चेतना है। भारतीय भाषाओं की मूल प्रेरणा का स्रोत-वेद पुराण, रामायण और महाभारत है। अंग्रेजों के द्वारा संस्कृत के विरुद्ध एक विवाद पैदा किया गया कि संस्कृत ही भारतीय संस्कृति है। औपनिवेशिक काल में अंग्रेजी भाषा के माध्यम से देश की भाषा और संस्कृति पर हमला किया गया। कम्प्यूटर संस्कृत को भाषा को समझता है इससे ये साबित होता है कि भारतीय भाषाएं बहुत ही अधिक वैज्ञानिक हैं क्योंकि सभी भाषा के निर्माण में संस्कृत की भूमिका महत्वपूर्ण रही है।

स्मृति व्याख्यान वाले सत्र का संचालन डा रामसुधार सिंह ने किया। सायंकालीन सत्र में काव्य गोष्ठी का शुभारंभ पद्मविभूषण छन्नूलाल मिश्र के आशीर्वाद से हुआ इस अवसर पर उन्होंने 'शब्द को अर्थ ज्ञान मात्र देते दो' पंक्तियां सुनाईं। इस अवसर पर अध्यक्षीय संबोधन करते हुए विश्वनाथ मधदेव ने 'मूर्पास को होते से थकियाने का सुख दिन को कुछ और बड़ा करने का सुख' जितेन्द्र नाथ मिश्र ने 'जिन्दगी में सदन है तो हास भी है' शैलजा सिंह ने 'जाने किसकी नजर लग गई अपनी सोमियौंच को' अशोक यायल ने 'मुस्कते यादों के चंद आंसू' अभिनव ने 'जिन्दगी का मजा' प्रतीक ने 'मैं तुम्हें और पृथ्वी से बस जीने' नमीषा मिश्रा ने 'पेड़ बदलते हैं जब कपड़े', उद्भव ने 'ये लड़की है या फौलाद' सरोज पाण्डेय 'ये नदी यू ही बहा करती है' इन्द्र कुमार 'दे चुका मैं देकर परीक्षा' वशिष्ठ अनूप ने 'मेरा हर रोज मगर हर हाल में जीना नहीं छोड़ा', ईश्वर ने 'प्राण में प्रीति बनकर समाई हुई, ये सितारों भरी रात है', पवन जी नया साल खुशियां ले आए, ज्योति कलश छलकाये' वासुदेव ओबराय ने 'रोशनी आती नहीं खिड़कियों पर' धर्मेन्द्र गुप्त, सुरेंद्र वाजपेई, सविकेश मिश्र, अनंत मिश्र, विद्याबिन्दु सिंह, वासुदेव ओबराय, मंजुला चतुर्वेदी आदि ने काव्य पाठ किया। कवि सम्मेलन के बीच में नवाब ने छन्नूलाल की प्रसिद्ध पंक्ति गाकर सुनाया 'होरी खेले मसाने में'। काव्य संध्या का संचालन प्रकाश उदय ने किया।

इस अवसर पर प्रो उदयन, डा संजय, डा चंदना, डा अमित, डा इसरार, डा गुलजबी, प्रो शर्वेश, डा रेनू राय,कमलेश,डा अरविंद, अनुराग, यज्ञेश्वर मिश्र, राजेश कुमार तिवारी (प्रबंधक) आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम में तकनीक सहयोग प्रतीक तिवारी, डा अनुपमा राय और शशिशेखर ने किया।

अमर उजाला | वाराणसी | शनिवार, 15 जनवरी 2022

भ्रम फैलाया गया कि लोगों को संस्कृत समझ में नहीं आती

पद्मभूषण पं. विद्यानिवास मिश्र की जयंती पर वेबिनार में विद्वानों ने रखे विचार

अमर उजाला ब्यूरो

वाराणसी। पद्मभूषण पं. विद्यानिवास मिश्र की जयंती पर तीन दिवसीय वेबिनार का समापन शुक्रवार को हुआ। विद्याश्री न्यास एवं लाल बहादुर शास्त्री पीजी कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में प्रमुख भारतीय भाषाएं समकालीन प्रवृत्तियां विषयक वेबिनार में देश भर से जुड़े विद्वानों ने विचार व्यक्त किए।

मुख्य वक्ता प्रो. राधा वल्लभ त्रिपाठी ने कहा कि भारत की भाषाएं आपस में एक दूसरे को संपन्न बनाती हैं उनमें आपसी प्रतिस्पर्धा नहीं रही है। पूरी दुनिया में यह भ्रम फैलाया गया कि लोगों को संस्कृत समझ नहीं आती इसके कारण प्राकृत बोलचाल में प्रचलित हुई। सत्य यह है कि प्राचीनकाल से ही बहुभाषा को बढ़ावा देने का कार्य भारतीय मनीषियों ने किया था। [illegible]

विचार रखते वक्ता।

शब्द को अर्थ ज्ञान आज देने दो...

वाराणसी। पद्मभूषण पं. विद्यानिवास मिश्र की जयंती पर विद्याश्री न्यास की ओर से ऑनलाइन काव्य संध्या का आयोजन किया गया। [illegible]

[illegible] शब्दों का इस्तेमाल किया था। विशिष्ट अतिथि प्रो. सूर्यप्रकाश ने कहा कि भाषा में बिना शोध अपनी रुचि से नवीन भाषा नहीं बनाई जा सकती है। अध्यक्षता कर प्रो. अच्युतानंद मिश्र ने कहा कि औपनिवेशिक काल में अंग्रेजी भाषा के माध्यम से देश की भाषा और संस्कृति पर हमला किया गया। [illegible] संचालन डॉ. रामसुधार सिंह और धन्यवाद डॉ. दयानिधि मिश्र ने किया।

भारतीय भाषाओं में प्रतिस्पर्धा नहीं, एक-दूसरे की पूरक

दैनिक जागरण, वाराणसी, 15 जनवरी 2022

विमर्श

- [illegible]
- [illegible]

[illegible] वाराणसी : सभी भारतीय भाषाओं की शब्दावली एक समान रही है। आपस में एक दूसरे से ही जुड़ी हुई हैं। एक-दूसरे की पूरक हैं। उनमें आपसी कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है। भारतीय भाषाओं में कौन दाता व कौन ग्रहीता है। यह कहना उचित नहीं है। विद्याश्री न्यास व लालबहादुर शास्त्री पीजी कालेज (दीनदयाल उपाध्याय नगर-चंदौली) के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित तीन दिवसीय 'प्रमुख भारतीय भाषाएं : समकालीन प्रवृत्तियां' विषयक ऑनलाइन संगोष्ठी का यह निष्कर्ष रहा।

पं. विद्या निवास मिश्र स्मृति में आयोजित संगोष्ठी के समापन सत्र में मुख्य वक्ता प्रो. राधा वल्लभ त्रिपाठी ने कहा कि संस्कृत को लेकर दुनिया में यह भ्रम फैलाया गया कि यह भाषा समझ में नहीं आती है। जबकि प्राचीनकाल से ही बहुभाषा को बढ़ावा देने का कार्य भारतीय मनीषियों ने संस्कृत में किया था। भारत में भाषा का एक व्यवस्थित दर्शन रहा है। समस्त भारतीय भाषाओं में समरसता की स्थिति रही है। विशिष्ट अतिथि प्रो. सूर्यप्रकाश दीक्षित ने कहा कि भारत माता की सभी भाषाएं एक ही स्वर मुखरित करती हैं। अध्यक्षता करते हुए प्रो. अच्युतानंद मिश्र ने कहा कि भारतीय भाषाओं की मूल चेतना वैदिक कल्याण की भावना है। स्वागत न्यास के सचिव [illegible] संचालन [illegible] धन्यवाद ज्ञापन डा. उदयन मिश्र ने किया। अंत में आयोजित काव्य संध्या में डा. [illegible] मिश्र, धर्मेंद्र गुप्त, सुरेंद्र वाजपेयी, रविकेश मिश्र, अनंत मिश्र [illegible] आदि ने काव्य पाठ किया।

• वाराणसी • शनिवार • 15 जनवरी 2022 • हिन्दुस्तान

सभी भारतीय भाषाओं का रहा है एक व्यवस्थित दर्शन

वाराणसी | प्रमुख संवाददाता

राष्ट्रीय संगोष्ठी

- भारतीय भाषाओं में समरसता की स्थिति रही : प्रो. राधावल्लभ
- भारतीय भाषाओं की मूल चेतना वैदिक कल्याण : प्रो. अच्युतानंद

भारत में भाषा का एक व्यवस्थित दर्शन रहा है। समस्त भारतीय भाषाओं में समरसता की स्थिति रही है। सभी भाषाओं में समान शब्दावली और मुहावरे रहे हैं। इसमें कौन दाता और कौन ग्रहीता है, इसका महत्व नहीं है। ये बातें साहित्यकार प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी ने कहीं।

वह शुक्रवार को विद्याश्री न्यास एवं लालबहादुर शास्त्री पीजी कॉलेज (पीडीडीयू नगर) की ओर से आयोजित तीन दिवसीय पं. विद्यानिवास मिश्र स्मृति राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र में मुख्य वक्ता थे। 'प्रमुख भारतीय भाषाएं : समकालीन प्रवृत्तियां' विषयक संगोष्ठी में उन्होंने कहा कि लोकभाषा में परस्पर संवाद होता रहा है। पूरी दुनिया में यह भ्रम फैलाया गया कि लोगों को संस्कृत समझ नहीं आती इस कारण प्राकृत बोलचाल में प्रचलित हुई। सत्य यह है कि भारतीय मनीषियों ने प्राचीनकाल से ही बहुभाषा को बढ़ावा दिया था। भारत की सभी भाषाएं आपस में एकदूसरे को संपन्न बनाती हैं।

राष्ट्रीय संगोष्ठी में जुड़े विशिष्टजन।

अध्यक्षीय संबोधन में प्रो. अच्युतानंद मिश्र ने कहा कि भारतीय भाषाओं की मूल चेतना वैदिक कल्याण की है। भारतीय भाषाओं की मूल प्रेरणा का स्रोत- वेद पुराण, रामायण और महाभारत हैं। अंग्रेजों द्वारा संस्कृत के विरुद्ध एक विचार पैदा किया गया कि संस्कृत ही भारतीय संस्कृति है। लिपि और भाषा में भेद के बावजूद भारतीय साहित्य की आत्मा एक ही है। अंग्रेजों ने भारतीय भाषाओं को अनुवाद की भाषा तक सीमित रखने का कुत्सित प्रयास किया।

विशिष्ट अतिथि प्रो सूर्यप्रकाश दीक्षित ने कहा कि भारत माता की सभी भाषाएं एक ही स्वर मुखरित करती हैं। भाषा में बिना शोध किये अपनी रुचि से नवीन भाषा नहीं बनाई जा सकती है। आज के भाषा वैज्ञानिकों के सामने बड़ी चुनौती यह है कि वे यथार्थ और आदर्श दोनों के मध्य तालमेल स्थापित करें। स्मृति व्याख्यान सत्र का संचालन डॉ. रामसुधार सिंह ने किया।

सायंकालीन सत्र में काव्य गोष्ठी हुई। शुभारंभ पद्मविभूषण पं. कन्हैयालाल मिश्र के आशीर्वाद से हुआ। अध्यक्षीय संबोधन में पं. विश्वनाथ मरवटेय, डॉ. जितेन्द्रनाथ मिश्र, शैलजा सिंह, अशोक पाण्डेय, अभिनव, प्रतीक, नवीमा निशां, उद्भव, सरोज पाण्डेय, इन्दु कुमार, डॉ. कविता अनूप, डॉ. ईश्वर पाण्डेय, पवन, वासुदेव ओबराय, धर्मेन्द्र गुप्त 'साहिल', सुरेंद्र वाजपेयी, रविकेश मिश्र, अनंत मिश्र, विद्याबिन्दु सिंह, डॉ. मंजुला चतुर्वेदी आदि ने काव्य पाठ किया। इस मध्य पं. छन्नूलाल मिश्र ने 'खेले मसाने में होरी दिगंबर...' रचना सुनाई। संचालन प्रकाश उदय ने किया। इस अवसर पर प्रो उदयन, डॉ. संजय, डॉ. वंदना, डॉ. अमित, डॉ. इशरत, डॉ. मुलायमी, प्रो. मनोज, डॉ. रेनु राय, कमलेश, डॉ. आर्किट, अनुराग, यज्ञेश्वर मिश्र, राजेश कुमार तिवारी आदि रहे। अतिथियों का स्वागत न्यास के सचिव डॉ. दयानिधि मिश्र ने किया।

राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित

१२-१४ जनवरी तक विद्याश्री न्यास एवं लालबहादुर शास्त्री पी.जी. कॉलेज, दीनदयाल उपाध्याय नगर, चंदौली के संयुक्त तत्त्वावधान में 'प्रमुख भारतीय भाषाएँ : समकालीन प्रवृत्तियाँ' विषय पर केंद्रित राष्ट्रीय वेबिनार के शुभारंभ उद्घाटन-समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी तथा विशिष्ट अतिथि प्रो. कुमुद शर्मा थीं अध्यक्षता प्रो. सदानंद गुप्त ने की। संयोजन व संचालन प्रो. श्रद्धानंद ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. दयानिधि मिश्र ने किया। पहले सत्र में प्रो. स्वर्णप्रभा चौनारी ने बोडो भाषा की; डॉ. गोमा देवी शर्मा ने नेपाली भाषा की; प्रो. ह. सुबदनी देवी ने मणिपुरी भाषा की और प्रो. दमयंती बेसरा ने संथाली भाषा की भाषिक विशेषताओं पर ज्ञानप्रद और रोचक व्याख्यान प्रस्तुत किए। प्रो. दिलीप मेधी ने असमिया भाषा के परिचय के साथ ही अध्यक्षीय वक्तव्य प्रस्तुत किया। संचालन तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सविता श्रीवास्तव ने किया। दूसरे सत्र में कन्नड़, तेलुगु, मलयालम और तमिल भाषा-साहित्य को लेकर इनके अधिकारी विद्वानों, क्रमशः प्रो. श्रीधर आर. हेगड़े, प्रो. सुषमा देवी, डॉ. एम्मिलीन एम.एस. तथा डॉ. गोविंद राजन ने व्याख्यान प्रस्तुत किए। प्रो. सोमा बंद्योपाध्याय ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन के साथ ही बांग्ला भाषा-साहित्य की समकालीन प्रवृत्तियों का विशद विवेचन किया। संयोजन व धन्यवाद ज्ञापन डॉ. नरेंद्र नाथ राय ने किया। दूसरे दिन तीसरे सत्र में सर्वश्री बलराम शुक्ल, शाईना रिज़वी, बूटा सिंह बराड़ ने अपने विचार व्यक्त किए। संयोजन तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. गोरखनाथ पांडेय ने किया।

चौथे सत्र में गुजराती, कोंकणी, डोंगरी तथा कश्मीरी भाषाओं और उनके साहित्येतिहास पर इन भाषाओं के अधिकारी विद्वानों, क्रमशः सर्वश्री ईश्वर सिंह चौहान, वृषाली मांद्रेकर, वीणा गुप्ता और गौरीशंकर रैना ने महत्त्वपूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किए। अध्यक्षीय वक्तव्य श्री विश्वास पाटिल ने दिया। संचालन तथा धन्यवाद डॉ. इशरत जहाँ ने किया। पाँचवाँ सत्र मुख्यतः जन-भाषाओं पर केंद्रित रहा। मैथिली, भोजपुरी, बुंदेली, अवधी, कुमाऊँनी के साथ ही पूर्वोत्तर भारत और मेघालय की जन-भाषाओं पर सर्वश्री सुनील कुमार, प्रकाश उदय, सुशील शर्मा, करुणा पांडेय, माधवेंद्र पांडेय तथा श्रुति पांडेय ने अपने विचार व्यक्त किए। अध्यक्षीय वक्तव्य डॉ. राजेंद्र रंजन दिया। संचालन तथा धन्यवाद डॉ. शुभा श्रीवास्तव ने दिया।

तीसरे दिन संपूर्ति सत्र में आचार्य विद्यानिवास मिश्र स्मृति व्याख्यानमाला के अंतर्गत मुख्य वक्ता प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी का व्याख्यान 'भारतीय भाषाओं की मूल चेतना' पर केंद्रित था। विशिष्ट अतिथि प्रो. सूर्यप्रकाश दीक्षित ने अपने विचार व्यक्त किए। अध्यक्षीय संबोधन प्रो. अच्युतानंद मिश्र ने दिया। स्वागत डॉ. दयानिधि मिश्र ने तथा संचालन एवं धन्यवाद डॉ. रामसुधार सिंह ने किया। सायंकालीन सत्र में काव्य गोष्ठी का शुभारंभ पद्मविभूषण छन्नूलाल मिश्रजी के छंदोबद्ध आशीर्वाद से हुआ। इस अवसर पर अध्यक्षीय काव्य-पाठ श्री विश्वनाथ सचदेव ने किया। सर्वश्री जितेंद्र नाथ मिश्र, शैलजा सिंह, अशोक घायल, अभिनव अरुण, प्रतीक त्रिपाठी, नसीमा निशा, उद्भव मिश्र, सरोज पांडेय, इंद्र कुमार, वशिष्ठ अनूप, इंदीवर, पवन शास्त्री, वासुदेव उबेराय, धर्मेंद्र गुप्ता, सुरेंद्र वाजपेई, रविकेश मिश्र, अनंत मिश्र, विद्याबिंदु सिंह, वासुदेव ओबराय, मंजुला चतुर्वेदी आदि ने काव्य-पाठ किया। संचालन तथा धन्यवाद श्री प्रकाश उदय ने किया।

वर्ष २०२१ का 'आचार्य विद्यानिवास मिश्र स्मृति सम्मान' के अंतर्गत श्री राजेंद्र रजन चतुर्वेदी को उनकी कृति 'धरती और बीज' के लिए तथा वर्ष २०२२ का श्री विश्वास पाटिल को उनकी कृति 'कस्तूरी परिमल' के लिए दिया जाएगा। 'आचार्य विद्यानिवास मिश्र लोककवि सम्मान २०२१' के अंतर्गत हिंदी-मैथिली के अप्रतिम गीतकार श्री बुद्धिनाथ मिश्र को एवं वर्ष २०२२ का 'लोककवि सम्मान' श्री रविकेश मिश्र को; वर्ष २०२१ का 'राधिका देवी लोककला सम्मान' पं. छन्नूलाल मिश्र को तथा वर्ष २०२२ का सम्मान श्री काजी अशरफ को 'युवा कला सम्मान' दिया जाएगा। सुप्रसिद्ध गीतकार श्री श्रीकृष्ण तिवारी की स्मृति में विद्याश्री न्यास की ओर से दिया जानेवाला 'गीतकार सम्मान २०२१' श्री महेंद्र सिंह नीलम को तथा 'गीतकार सम्मान २०२२' श्री इंदीवर को, 'आचार्य विद्यानिवास मिश्र पत्रकारिता सम्मान २०२१' श्री अच्युतानंद मिश्र को और 'पत्रकारिता सम्मान २०२२' से श्री विश्वनाथ सचदेव को सम्मानित किया जाएगा।

युवा-समवाय के अंतर्गत विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी निबंध, कहानी एवं कविता प्रतियोगिता आयोजित की गई। निबंध के लिए श्री उत्कर्ष अग्निहोत्री, कहानी में श्री किंशुक गुप्ता और कविता में सर्वश्री प्रतीक त्रिपाठी, नीलम मिश्रा और उत्कर्ष अग्निहोत्री को प्रमाण-पत्र सहित पुरस्कार दिए जाने का निर्णय लिया गया है।

वाराणसी। मंगलवार • 15 फरवरी • 2022 राष्ट्रीय सहारा

यज्ञ की सनातन परंपरा के जीवित उदाहरण थे पंडित जी

वाराणसी (एसएनबी)। पं विद्यानिवास मिश्र की पुण्यतिथि पर 'विद्याश्री न्यास, [illegible] न्यास एवं लालबहादुर शास्त्री स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दीनदयाल उपाध्याय नगर, चंदौली के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'यज्ञ की सनातन परंपरा' विषयक संगोष्ठी और संस्कृत कवि सम्मेलन का उद्घाटन मुख्य अतिथि सम्पूर्णानंद संस्कृत विवि के कुलपति प्रोफेसर हरेराम त्रिपाठी द्वारा पं [illegible], पंडित जी और पं प्रसिद्ध नारायण मिश्र के चित्र पर माल्यार्पण और दीप-प्रज्वलन कर किया गया। इस अवसर पर प्रो हरेराम त्रिपाठी ने 'अष्ट [illegible]', '[illegible]' एवं 'भारतीय भाषा चिंतन की परंपरा' नामक पुस्तकों का लोकार्पण किया।

पं प्रसिद्ध नारायण मिश्र व्याख्यान के क्रम में बीएचयू के प्रो [illegible] शर्मा ने कहा कि सृष्टि में जो कुछ भी घटित हो रहा है वह सभी यज्ञ का स्वरूप है। उन्होंने यज्ञ के आधिभौतिक, आधिदैविक एवं आध्यात्मिक तीनों रूपों का विशद विवेचन किया। यज्ञ

विद्यानिवास मिश्र की पुण्यतिथि पर संगोष्ठी व हुआ पुस्तक विमोचन

संस्कृत पूरी प्रकृति के साथ जुड़ा है। यज्ञ का उद्देश्य पृथ्वी के समस्त जीवों के प्रति सकारात्मक दृष्टि रखना है। जब हम वनस्पति का दोहन करते हैं तो उसका हम सभी पर व्यापक दुष्प्रभाव पड़ता है। यज्ञ ही वह माध्यम है जिससे हम वातावरण को शुद्ध करते हैं। शारीरिक और मानसिक शुद्धि हमें यज्ञ करने से ही प्राप्त होती है। कुलपति प्रो हरेराम त्रिपाठी ने कहा कि पंडित जी यज्ञ की सनातन परंपरा के जीवित उदाहरण थे। पंडित जी की रचनाओं को पढ़ते हुए वेद और लोक की वृहद जानकारी मिलती है। अध्यक्षीय संबोधन देते हुए प्रो मुरली मनोहर पाठक (कुलपति लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ) ने कहा कि इस संगोष्ठी में शामिल होकर हम सभी ज्ञान यज्ञ की संपूर्ति कर रहे हैं। इस अवसर पर उन्होंने पंडित विद्यानिवास जी की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि दी और उनके विराट रचना संसार को प्रणाम किया।

उद्घाटन सत्र के आरंभ में प्रो [illegible] दीक्षित ने वैदिक मंगलाचरण किया, आभासी पटल से जुड़े सभी लोगों का स्वागत [illegible] दयानिधि मिश्र ने एवं मंच का संचालन प्रकाश उदय ने किया। [illegible] सत्र में संस्कृत कवि गोष्ठी का आयोजन हुआ जिसकी अध्यक्षता प्रो. [illegible] प्रसाद मिश्र ने तथा संचालन प्रो. श्रीप्रकाश अधिकारी ने किया। स्वागत करते हुए डा. दयानिधि मिश्र ने विद्याश्री न्यास की ओर से पं [illegible] त्रिपाठी संस्कृत कवि सम्मान 2021 एवं 2022 में क्रमशः [illegible] पाण्डेय एवं [illegible] पाण्डेय को सम्मानित करने की घोषणा की। इस अवसर पर प्रो उपेन्द्र पाण्डेय, अरविंद त्रिपाठी, [illegible] पाण्डेय, [illegible] प्रसाद, [illegible] शुक्ल, विवेक पाण्डेय, [illegible] कृष्ण द्विवेदी, [illegible] आदि ने काव्य पाठ किया। काव्य गोष्ठी में सभी कवियों को [illegible] मिश्र ने धन्यवाद अर्पित किया। इस [illegible] में तकनीकी सहयोग [illegible] त्रिपाठी व [illegible] मिश्र ने किया।

दैनिक जागरण
वाराणसी, 15 फरवरी, 2022

प्रकांड विद्वान और जाने-माने भाषाविद् थे प्रो. विद्यानिवास

पुण्यतिथि

जागरण संवाददाता, वाराणसी : संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. हरेराम त्रिपाठी ने कहा कि साहित्यकार, पत्रकार व पूर्व कुलपति प्रो. विद्यानिवास मिश्र संस्कृत के प्रकांड विद्वान व जाने-माने भाषाविद् थे।

प्रो. विद्यानिवास मिश्र की पुण्यतिथि पर सोमवार को कुलपति प्रो. त्रिपाठी पंडित प्रसिद्ध नारायण मिश्र स्मृति व्याख्यान में यज्ञ की सनातन परंपरा विषय पर आयोजित वेबिनार को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। कहा कि हिंदी साहित्य को अपने ललित निबंधों व लोक जीवन की सुगंध से सुवासित करने वाले विद्यानिवास मिश्र ऐसे साहित्यकार थे, जिन्होंने आधुनिक विचारों को पारंपरिक सोच में खपाया था। साहित्य समीक्षकों के अनुसार संस्कृत मर्मज्ञ मिश्र ने हिंदी में सदैव आंचलिक बोलियों के शब्दों को महत्व दिया। उनके अभूतपूर्व योगदान के लिए भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री व पद्मभूषण से भी सम्मानित किया। कहा कि हिंदी के ललित निबंधों की परंपरा को उन्नति के शिखर पर पहुंचाने वाले कुशल शिल्पी थे।

लोकगीत के संरक्षण पर सदैव ध्यान रखकर ही कार्य करते थे। उनका जीवन कृत्य यज्ञों से युक्त था। वह यज्ञ की सनातन परंपरा के पोषक थे। इसके पूर्व कुलपति ने मां सरस्वती, पंडित प्रसिद्ध नारायण मिश्र व विद्यानिवास मिश्र के चित्र पर माल्यार्पण कर नमन किया तथा दयानिधि द्वारा लिखित भारत में भाषा चिंतन की परंपराएं, गायत्री प्रसाद पांडेय की पश्यंती तथा उदयन मिश्र की शब्द साक्षी पुस्तकों का लोकार्पण किया।

अमर उजाला
वाराणसी मंगलवार, 15 फरवरी 2022

पं. विद्यानिवास मिश्र की पुण्यतिथि पर दी श्रद्धांजलि

वाराणसी। संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय में साहित्यकार, पत्रकार एवं पूर्व कुलपति पं. विद्यानिवास मिश्र की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। कुलपति प्रो. हरेराम त्रिपाठी ने कहा कि हिंदी साहित्य को अपने ललित निबंधों और लोक जीवन की सुगंध से सुवासित करने वाले विद्यानिवास मिश्र ऐसे साहित्यकार थे, जिन्होंने आधुनिक विचारों को पारंपरिक सोच में खपाया था। वह सोमवार को पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित स्मृति व्याख्यान को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान पं. प्रसिद्ध नारायण मिश्र व पं. विद्यानिवास मिश्र के चित्र पर माल्यार्पण कर नमन किया। इसके बाद दयानिधि मिश्र की पुस्तक भारत में भाषा-चिंतन की परंपराएं, गायत्री प्रसाद पांडेय की पश्यंती तथा उदयन मिश्र की पुस्तक शब्द-साक्षी का लोकार्पण किया गया। ब्यूरो

हिन्दुस्तान वाराणसी • मंगलवार • 15 फरवरी 2022 •

यज्ञ की सनातन परंपरा के उदाहरण थे पं. विद्यानिवास

वाराणसी | प्रमुख संवाददाता

पं. विद्यानिवास मिश्र यज्ञ की सनातन परंपरा के जीवित उदाहरण थे। उनकी ख्याति सनातन जीवन वाले व्यक्तित्व के रूप में थी। उनमें धर्म के सभी दस लक्षण विद्यमान थे। सच्चे अर्थों में वह भारतीय सनातन परंपरा के ध्वज वाहक थे।

ये बातें संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. हरेराम त्रिपाठी ने सोमवार को पं. विद्यानिवास मिश्र की पुण्यतिथि पर आयोजित 'यज्ञ की सनातन परंपरा' विषयक संगोष्ठी में कहीं। ऑनलाइन आयोजन में प्रो.त्रिपाठी ने कहा कि वह परंपरा को बंधन नहीं मानते थे बल्कि उसे जीवन जीने का आधार मानते थे। मुख्य अतिथि ने 'शब्द -साक्षी', 'पश्यन्ती' एवं 'भारतीय भाषा चिन्तन की परंपराएं' पुस्तकों का लोकार्पण किया। अध्यक्षता लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ के वीसी प्रो. मुरली मनोहर पाठक ने की।

पं. प्रसिद्ध नारायण मिश्र व्याख्यान के क्रम में प्रो. हृदयरंजन शर्मा ने यज्ञ की परंपरा बताई। इस मौके पर विद्याश्री न्यास की तरफ से 'पं. रामकरण त्रिपाठी संस्कृत कवि' सम्मान की घोषणा की गई। 2021 का सम्मान पं. कौशलेन्द्र पाण्डेय एवं 2022 का पं. उपेन्द्र पाण्डेय को दिया जाएगा। विद्याश्री न्यास, ब्रह्मनिधि न्यास व लालबहादुर शास्त्री पीजी कालेज चंदौली की ओर से आयोजित कार्यक्रम के आरंभ में स्वागत डॉ. दयानिधि मिश्र एवं संचालन प्रकाश उदय ने किया।

संस्कृत कवि सम्मेलन प्रो. विन्देश्वरी प्रसाद मिश्र की अध्यक्षता व प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी के संचालकत्व में हुआ। इस सत्र में प्रो. उपेन्द्र पाण्डेय, अरविंद त्रिपाठी, कमला पाण्डेय, कृपाराम, गायत्री प्रसाद, बलराम शुक्ला, विवेक पाण्डेय, सदाशिव कुमार द्विवेदी, धृति कानिटकर, चन्द्रकान्ता राय, सतीश कपूर आदि ने काव्य पाठ किया।

पुण्यतिथि पर स्मरण

- वह परंपरा को जीने का आधार मानते थे : प्रो. हरेराम त्रिपाठी
- 'शब्द -साक्षी', 'पश्यन्ती' सहित तीन पुस्तकों का लोकार्पण

पं.विद्यानिवास की पुण्यतिथि पर पुस्तक का लोकार्पण करते संस्कृत विवि के कुलपति प्रो. हरेराम त्रिपाठी व अन्य ।